

सुप्रसन्न

सुप्रसन्न

1.228

ASMA ARCHIVES

विर्लस्येन दनां कवचं नका वयत् । अंगुष्ठं स्रमक मालां चालय मधुमाय
न ॥ नर्कं न्या नस्येन सायं मूकं दागल नक म॥ रुक्मि मूकं न था रुक्मि ॥ मधुमायां ज
पूजा ॥ अंगुष्ठं नामिकायां ॥ जय दूत सकर्मणी । नर्कं चैंगुष्ठं सीथागा
दत्ता घात नर्कं यथा कनिष्ठा ॥ गुष्ठं सीथागा ॥ जयत्मा वलकर्मणी । जः
कालर्त मालां यूज्यन्ति तुल्य यथत् ॥ गुच्छका नय द्विदा ॥ नैव सर्व कदाचन ।
अन्तर्गत मूडाव ॥ गुच्छा वयि नदस्यि ॥ रुक्मि नक सर्व माला ॥ सिद्धि ग॥ धर्मे नक सा॥

रुचिनिबुद्धयसा लल्लायां दुष्टं जयन्तु श्री ॥ जीर्णं सुते यूनः सुतं गंधयित्वा न नैजयन् ॥
 यमादाय निमं हला कुनमया रुचं जयन्तु । नावनिविष्टं सस्यं नै कालयित्वा यथैव नमः ॥
 जयमा लाविद्याय स्थं जयवका नमः शुभं । जयः स्यादकृत्वा दुर्हिं सुस्य रुदानय
 यी मृदु ॥ जयः प्रद्वि विद्या सुधा वावि कामानसलथा ॥ अथाः योऽपु वृष्टं द्विवि
 ॥ ४ यनि कीर्तिनः ॥ द्विनीयायि द्विवा याका ॥ जिह्वा चिरु यरु दनः । यव नीवस्य वि
 ने ॥ ४ नष्टे ॥ ४ स्य सुयदा कवे ॥ मनू सुखा वय द्वावा ॥ सडका वाचिका जये ॥ नै दुर्वो वय लं न मीः
 द ॥ सुयवा लयन् ॥ किं चित्वा वयथा ग्य ॥ ४ स्या ॥ टयाऽपु ॥ सजय ॥ ४ स्य न ॥ निह्वा जय ॥ सविहं य

४८ वलजिह्वायाजय ॥ धियायद्वयं तर्जं सडका मानसाजय ॥ उच्चैर्जयाद्विनिह्य ॥ स्या
इयागु द्वागुलिगु ॥ जिह्वाजय ॥ गतगु ॥ सडका मानसाजय ॥ मानमसिद्धि कामिमु
युष्टिका मेव यौगु क ॥ वायिका माजः ॥ ॥ ध्येव ॥ यगुजय ॥ विनिह्य ॥ विमलाननः
यि ॥ ॥ मनः ॥ सडका ॥ सीव ॥ सीन ॥ सात्मानुचिरुनन ॥ अययत्वमनिर्वयः ॥ जय
संयद्विरुनय ॥ मनु मनु मयं द्वायाः ॥ निगद ॥ सडका ॥ सडका ॥ गतगु ॥ यत्तत्त
मीयद्युष्टिका जय ॥ किंचित्पुवयथागु ॥ स्या ॥ द्यौगु ॥ सडका ॥ सडका ॥ धियायद्वयं तर्जं
धी व स य समन्विताम् ॥ उदयं दनू सस्य ॥ मानसः ॥ सडका ॥ सडका ॥ उद्यौगु ॥ स्या ॥

यूवध्वजवलयवस्त्रमूर्ति ॥

लीजामकृष्ण ४ लीकृष्णनज ४ सीसययलन ४ ॥ कथानि मूडा मकृष्ण मस सांख्यावनी कन ॥ का
लिकायूवा ॥ यना मूडा यवक्षाम मूडा यूप्ययदायिनी ॥ दवाना मादम ॥ कृष्ण
यिनी कर्लनस्या ॥ रुसा मूडा चिना रुवन् ॥ मूडा सूसीलिना यूजा ॥ मूडा सूयविचिनु ३
नम् ॥ मूडा सूसीलिना यागी ॥ मूडा सा दकवीनन ४ ॥ यूवध्वजवलयवस्त्रिकायामयि ॥
॥ अथ मूडा युवध्वमि ॥ सर्वे ननु यूजायिना ४ ॥ यारि विचिना रिशु ॥ मादक मकुदवना
॥ रुवलो ॥ वीसीवादि ॥ ॥ ननयै सर्वे दवाना ॥ मूडा रुवयुदामना ४ ॥ यूजा कालंदर्गनी

या ॥ मूडा सा सर्वे दानि ॥ लयनयुकायि ननु वाक ४ ॥ ॥ नकातुदनेय मूडा ॥ मकाजनसमा
गम ॥ मुकुभननकाय वि ॥ नसाड रु सिथा जयन् ॥ नदी जि नस्य मूडा ॥ वदलानियु काली
यन् ॥ ॥ र्निदवना सुस्य ॥ विपूवी ॥ चरुवदिनि ॥ अनायि ॥ ॥ अनामालानथा
मूडा ॥ गुवा ॥ ययिनदनेय दिनि ॥ मूडा यया समथायि ननु व ॥ ॥ अर्धे ननु य काल
व ॥ ॥ नका मययवमेलि ॥ लानवावा रुनर्लख ॥ यनिस्यायां यवदलो ॥ नैवी यवन
थान्यन ॥ नरु काल्ययु कालिन ॥ लान मूडा ४ यडरुवा ४ सखलकललकिना ४ ॥ अवाकनादि
कामूडा ॥ नवसाधवला मता ४ ॥ १० ॥ ॥ नथा यडंग मूडा ॥ सर्वे ननु यूजा जयन् ॥ नकाने विना

तिमूडा विष्णुका मनीषिः ॥ ॥ नखवक गदाय द्य वं लूणी वल्लको सु रा ॥ वनमालानथ ॥
 न मूडा विष्णुका यानथ ॥ वाण मूडा नथ यल्लु ॥ जगत्मा रुनिकानथ ॥ गवूदाखा नथ मूडा वि
 ष्णुका मनीषिः ॥ नावसिद्धी ववाजा ॥ दयगी वाधनूकथ ॥ काम मूडा ॥ समाखा
 ना ॥ निवस्य दल मूडिका ॥ लिंगया नि ॥ निष्कलाक माल द्य ही मृग मिका ॥ खद्वी गंर ४
 कयाला रया ॥ उमच्च ॥ निवना यदा ॥ स ॥ यो सो केव यद्याखा ॥ सय मूडा गेलिडु ॥ दन
 यानां कल विष्णु यल्लु लङ्क सीरु का ॥ वीज यूवा द्य मूडा ॥ विरु या ॥ नकि यूजन ॥ यानां कल
 नवा हीनी ॥ खद्वी मनीष नू ॥ नवा ॥ मोगली मूडिका दोनी ॥ मूडा रुणक ॥ यिथ कवा लिङ्गी मूडा

चैनल ॥ वाद्यादि न्यायु यूजन ॥ दलमा मूडिका रूया ॥ क्रियूवाया ॥ युयूजन ॥ स रुडावला क
 र्वा ॥ वला माद मरु कला ॥ खव वी वीज या न्याखा ॥ निखंडा ॥ यविकी लिता ॥ कुरु मूडा रिष क र्या
 ल्यमूडा नथ सन ॥ कालक लो यथा कः ॥ या विद्वय नम कर्मणि ॥ गलिनी वय या कया
 जललाधन कर्मणि ॥ लीलाया ला चैन व ॥ धूर्त रुव नावसिद्धिका ॥ वाया रुस्य वयूजा या
 ववाखा यदनेयत् ॥ दयगी वा चैन व ॥ दयगी वा चैन दनेयत् ॥ वासा चैन नू वोन मूडा
 यल्लु रूथ चैन ॥ यल्लु वामस्य विरु या ॥ जगत्मा रुन सीरु का ॥ जगत्मा रुन यूजा या ॥ काम मूडा नद चैन
 न ॥ वायु द वा द्य का न ॥ कुरु मूडा रुव कला ॥ सर्व रूया र्थे न मूडा ॥ यार्थे नाखा यदनेयत् ॥ विष्णु

यावत्तकव (५) विस्मयास्यां यदर्थयत् । नादविन्दु उरु मूड ॥ उरु स्तान निशुजयत् ॥ सी हा वा
 र्धमिहा मूडा ॥ विसर्ज न वि (क्षे) मता । लल्लु स्तय न मूडा च ॥ ह्यादवन मस्कुनी ॥ ॐ ति गृ
 र्द यूर यथ ॥ वन्दि कायाम न्यायि ॥ कालिका यूना (५) यि ॥ गीरुगवानू वाच ॥ उ
 कास्तवन मस्कावा ॥ ७७ नै य व न्याय वा ॥ न । मूडा धी य वि मा धी य ॥ स्वयं य व न धा यि यो
 ॥ ५५ नृध र्म यूर (५) व ॥ योजलि विस्वय ॥ यको । ना वा या म उ द जी ह्यो ॥ यानि व र्द्ध न ५५
 वय ॥ वन्दनी याम हा मूडा ॥ महायानि स्त (५) व य ॥ ॥ रु ध्र यूर क (५) व ॥ स ग्गो र्ध वि व र्द्ध क ॥ ५५ अंग
 व वि मुख र्धे व ॥ न र्ध मूडा च धालिक ॥ व र्द्ध र्धे व र्ध र्धे व ॥ स्वयानि र्द्ध मर्न न था ॥ घट ५५ निस्व वि

धीं तु ग ॥ ५५ उरु स्तान्ना र्द्ध ध नू क ॥ सीमीलनी च कृष्णं च ॥ व र्द्ध धूर्त न (५) व य ॥ नि मुख धा सि व ली य था
 लामो हा थ रु द नू स । वा (५) ध नृध्र उ ५ नी च ॥ मूडा च ना सु स न्क मा ॥ ५५ अरु रु व न र्ध मूडा ॥ व र्द्ध धा य
 वि की र्ति ना ॥ ना सी तु र्धे व र्धे वा न ॥ कृष्ण ॥ आरु यूर न ॥ ५५ धा सु या ॥ र्धे वा न ॥ मूडा स्तान्ना ५५
 मय यूर । दं दान य न र्धे क न ॥ ललाटा दि ॥ यूर ना ५५ स्तान्ना ५५ ॥ द वानां वि न र्धे या ला ॥ धा न जा य
 विसर्ज न ॥ आरु रु र्धे व र्धे वा न ॥ दा व ॥ ना ल की र्ति ना ॥ मूडा वि ना व र्द्ध र्धे व ॥ धा वा या
 मसू ॥ ग र्ध न म ॥ या ला धा न स न्क वा यि ॥ नि ५५ रु लानि च र्धे व य ॥ ५५ अरु र्धे व र्द्ध धा ना सा ॥ ७७ नै न न
 था ॥ यूर वा म ॥ ललाटा मा सी मस्कुन ॥ सुगुण म ध व द्या मि ॥ ५५ व दानि ल क यि ॥ ॥ आ वा रु धा दि

कामडाः सुवश्चामियथाकमम् ॥ यारिद्विवविनाहिरु मादनेमनुदवता ॥ अचययि ॥
 आयादनेन स्या यनच सनिधनेन निधाधनं । सत्रिकर्षो वगुं टष्टु यार्थेन यवमीकृति ॥ १ ॥
 कलीकवर्णं येव कोरुनडावः ॥ २ ॥ अकर्वो वलनात्माद नारयाहूयामदा
 कृण ॥ ३ ॥ खचवीवीजया न्या निखः ॥ ४ ॥ अंकुषया निवा ॥ ५ ॥ अंकुषा यननावाची ॥ ६ ॥ अनुग
 वृत्तसैहिक ॥ ७ ॥ गालिनी विनमासुहि मूः ॥ ८ ॥ डावकमदाहया ॥ ९ ॥ मूष्टिमूडवथानिष्ठ ॥ १० ॥ सीरुवः
 आधमूडिका ॥ ११ ॥ अयामास्यातथा मूडा आनादानमानवा ॥ १२ ॥ ननामूडामयाथा का मिमूवाया ॥ १३ ॥
 पूजनं । वविवस्यायद्वेगाव थवमकम ॥ १४ ॥ नानदानिलकमूडा ॥ १५ ॥ यका ॥ १६ ॥ वर्मसु ॥ १७ ॥

५२

मूडाः कामनाहूया यद्यपानगदाहया ॥ १८ ॥ मूलालानिख ॥ १९ ॥ ह्याः हूयागुर्व्ययदंनत ॥ २० ॥ अचयुनि
 मूडासुता ॥ २१ ॥ कामनीदेसीयपूकवी ॥ २२ ॥ पूकवीकवसंकावी देसीमूककनिष्टिका ॥ २३ ॥ मृगीकनिष्टा
 नर्कन्या ॥ २४ ॥ वृकमूडागुयमया ॥ २५ ॥ अहूणा ॥ २६ ॥ निककार्येव मृगीदेसीयकीहिना ॥ २७ ॥ अरियाः
 विकृष्टयव ॥ २८ ॥ पूकवीकुवणस्यत ॥ २९ ॥ नि ॥ ३० ॥ ह्यकृष्टकमपासां नामवकृष्टमूष्टन ॥ ३१ ॥ नियः
 मादधिकायश्च ॥ ३२ ॥ विहायावूयथागिः ॥ ३३ ॥ पीः ॥ ३४ ॥ मूडामूडावचनीया ॥ ३५ ॥ वेष्टुवीयार्थेनाकृण
 म ॥ ३६ ॥ अनूष्टनारुथयथा ॥ ३७ ॥ गवृठीनकिमूडिका ॥ ३८ ॥ नानाय ॥ ३९ ॥ कालकसीय ॥ ४० ॥ कृक ॥ ४१ ॥ कृक ॥ ४२ ॥ सर्ववृक

गतिनीसयजिह्वाख्या यथाहुं नृ० समीनक० आवाहं स्थायनं च सन्निधनं निशाधनं ॥
 सन्निधनं वसुधुधु अठंगयवमी ॥ इति १॥ गत्युथायनवितता स्थलिककृयमूय
 अ० ॥ आनृ० युगास्वयानधु यानाः ॥ दानसमानका ॥ नृ० स्ववकनिदायद्व वं धूणी
 वस्सकीमुहा ॥ वनमालाल्लानविल्ल ॥ वाणयवधु कगावृदा ॥ सीयूटावृदनीयाव वी
 सुवीयूटकसुध ॥ नावसिंधानिगर्हा ॥ उ० विसुखं वकमवय ॥ आवर्द्धमष्टिवियूला
 ॥ क्रीरुगुग० सयूडक० ॥ स्थलिकं वस्वयानिधु ॥ हिहास्याणामुखीनथा ॥ थालासनं लासनं च विस्व

वसुधुयनं नथा ॥ पुर्द्धत्याग० सावणीय ॥ नथेवदियुसावली ॥ उगमूडावियर्योला ॥ कृष्णलीयाग
 रुदनं ॥ सीमाहनं धनं सुन ॥ रुयगीवाववाहिका ॥ ॥ वेषवाधुदेवी ॥ काममूडावियिया ॥ लि
 गथानिगिलाका ॥ मालेष्टासीसुत्तिका ॥ ॥ स्वदा निधु कयालास्या ॥ उमवृ० सीयूटाम्बु
 म् ॥ स्थानिरुगकूठव ॥ दगथोलास ॥ नादिकम् ॥ कृष्णलंवासिवलीय ॥ थागमदीयमा
 रुनी ॥ काममूनीवकास्या ॥ रुवसीमाव ॥ दायिका ॥ ॥ यथाधनं सीयूटधु ॥ दीउवेवाहुवतु
 क० ॥ स्थानिकानिखविणी ॥ नथाथासासनादिकम् ॥ कृष्णलीयागनामाय ॥ सीमाहावाधवृनिक ॥
 मूर्योलीना ॥ थियाधनं ॥ सीयूटामूधुसिहिक ॥ ॥ स्थानिथालासनादि ॥ कृष्णलीयागमाहन ॥ वाधः

यलु यन नथ । लुई त्याग ४ सावणीव । नथेव दि य सावणी । उग मूडा वि य र्य सा । कलु
 लं त्याग रु द न । संभा रु लं ध नू लून । रु य री वा व ना दि काः ॥ वं च वा लु दे वी । का म मूडा
 रु वि यि या ४ । लिं ग या नि लि यि या क । सा ल ह्वा री म त्ता । का ४ ॥ ख द्वा मी च क या ना र्था उ म
 वू ४ सं यू टा म्बु ज न । स्य था नि रु ठा वू उं व । द ग षा ला स ना दि क म् ॥ कलु लं च सि व
 ली च । या ग रु दौ र मा रु नी । वा म रु नी च का र्था । रु व सं ता स दा यि का ४ ॥ य द्वा ध नू सं
 यू ट थ । दं उ री वा ड्ड रु रु क ४ । स्य था नि कालि र्वा वि णी । न थ या ला स ना दि क म् ॥ कलु लं या ग
 ना मा च । सं भा रु वा ल नू लि क । सूर्ये र्थे ना ४ यि या ध नू । सं यू टा मू लु स र्ति क ४ ॥ स्व मा नि

या ला स ना दि ४ कलु लं या ग मा रु न । वा ल नू ली च सं रु च । वी ज यू वा द्वा या न थ ॥ दं व या ली
 कलु लं वि च्च । यलु लं रु क सं रु क ४ । मू डा नू ना ग लो न स्य । या ली कलु लं व ना रु य म् ॥ ख प्र य
 मा ध नू र्वा ना । इ म्मा र्था मी न वी न थ ॥ स्य था नि सं यू टा था नि । वू ग मू डा च क ल म् ॥
 या ग ४ सं भा रु ना वा लो । मू डा ४ ल क ४ । यि या दू म । ल क्शी मू डा रु ग ले व । सं यू ट थ स्य
 था नि का ४ ॥ कलु लं मा रु न या ग ॥ वा ल नू ना व मा यि या ४ । सं व स र्था अ रु मा ला ।
 वी ल । या र्था न यू ल क म् ॥ वा ल कलु ल नू ली च । या ग मा रु न सं यू ना ४ । द ल मा मू डि का रु या
 सि यू वा या ४ स म र्ध ना ॥ सं क्का रु डा व ल क र्वा । व लो ला द म रु क ल ४ । क व री वी ज या न्था

त्रिखण्डयविकारिणाः। विस्मयानादविभूय। योजलिस्याद्धे। धनूकः॥ सीसीसनी गृहबीयः।
 सीत्यास्यासिदल्लिकाः॥ ॐ ह्यादया यवामूडाः। ह्याः॥ ह्यानुसावनाः॥ नगानवमूडाः।
 कलकलल्लिकाः। विरूयाडगनाः। विष्णुः। रुधरायूधलक्षणाः॥ यतः॥ सर्वोत्तिकाः।
 दवीः। नीलवाणीमिगीयनः। सर्वदवः। मयीदवीः। सर्वोत्तिकाः॥ सर्वदवः।
 वाचः। सर्वगः। सर्वदहिनीः। समस्तः। हृदानित्याः। यववस्यकाणिनीः॥ अथयानः॥
 लीर्यस्तुः। गुर्वोत्तिकाः। सीयुटंयोजलीवायिः। उदिलीर्ययुदल्यनः॥ चन्दनीयासमाः।
 ह्यानाः। मूडाविष्णुयमादिनीः। सेववासीसकाः। मूडायकीर्तिनाः॥ दक्षिणाः। अथयोगः।

सप्तकाः। वेसवीयविकारिणाः॥ यस्तुनंगुलिकीरुसीः। मिथः। लिख्येवसीमूखीः॥ कुर्यात्सद्वद
 यत्रयः। मूडायार्थेनसीरुकाः। वविदस्यायार्किचिद्धः॥ त्रिष्यवयसाविनागुह्याः। योजलियार्थ
 नमनः॥ निकृजयुगलंयाः। निथ्याः। सुद्धधवययाः॥ मधुगुनीयूटावाचः। योजः।
 लिख्यविकारिणाः॥ ॐ तिकासिकायुः। वाः॥ ॥ अकमृष्टिगृहीतस्यः। वामगु
 ह्युक्तनीः। यसार्यमधुमांकीशुः। सयमीकृणमूडिकाः॥ वलिवस्यायार्विषः॥ ॥
 विष्णुर्द्धमूरुहस्तः। दक्षिणासक्तानंगुलिः। नर्कनीकटिलोक्याः। दामधुमधुमागुलः॥ च
 कामनामिकाकुर्याः। कूकडुदंनिरागतः॥ ॐ यमीकृणमूडास्याः। दस्तनाकर्षः। मकतिः॥ यूनः।

धुवधवलि काया रुंद ॥ ॥ क्रीययंसमीकृत्वा नर्तनीमुख्ययव्वनी । सीयाझाकंययुक्ति
वि॥ मूडेयांकुलसंहिका ॥ अयाचगंधिको रुक्मा विद्यायांगुलिसंधि वृ । यत्तस्यामोक्ष
मया समुक्त्यायाययदु ॥ नवाय उरुनाकावा ॥ धनमूडायकीहिना । अमनी
क॥ वेना सर्वेदेवनिथाजयन । यधकृतादकुरु ॥ यरुतावरेमूडिका ॥ ३०
डोकतावामरु ॥ यरुतावरेमूडिका ॥ रुक्मोडुसंमुखीकृत्वा सन्नगाडनगांगु
ली । गलानुमिलितांगुली मूडेयाययसंहिका ॥ मनिवधादाकनेरु सीयाझाकंययुक्त्या
॥ अंगुलियायिसीया ॥ नथेवचकनिरुथा ॥ निमुस्मि सादृथा ॥ या ॥ वंगुलीविवलास

न॥ यशमूडसमाख्याना वडुवेनेरुलयदा । रुक्मोडुविमुखीकृत्वा यथयित्वाकनिष्टिक ॥
मिथसुर्ज क था ॥ लिष्टावंगुलु ॥ कोनथा । मयामानामिकवंधु ॥ धंयकाविवयालय
न ॥ मूडेयांगानदीविकु गायगीग
धुवसुलि ॥ गायल्या ॥ कथितामूडा
मूर्ति कृत्वायसाययन ॥ नर्तनीक
नवानियो ॥ रुद्रवाद्रुद्रयसाययन ॥ नवानावायमूडस्या ॥ इनाकाननिथाजयन ॥ कालि
कायुवा ॥ रुंद ॥ अंगुलियायनर्तनीया ॥ सीयाझा ॥ धा ॥ धंयययया । अयांगुलीसुथायधुना

वाच १॥ स्यात्सार्धं ॥ न चामुडा निवायायुः यीनिदाययजामता । नावाचमुडासनम् ॥ यीथेयना
 लरेववा ॥ अंगुष्ठावुक्तनीकृत्वा मुखोऽसिलग्रथाद्वैथाः । नाववाहिसूखीकृत्वा ॥ त्रैदेवाकालक
 र्त्तुका ॥ नमयथाकथं स्यात्तु विष्णुः ॥ युष्मकर्मली । दन्तौ सुखं यजंगुष्ठं ॥ किं स्याद
 सद्वाचानु ॥ सावकात्तुत्तमं सृष्टिः ॥ कुर्यात्सावकं रुमूर्द्धिका । न चायुगमलिकानां स
 मुडास्यादलिथयनं ॥ वामांगुष्ठं तु स
 मूर्द्धिः । मंगुष्ठं तु यवसावयनं ॥ वामांगुष्ठं सृष्ट्यालिथ्याः ॥ सैयूकिः ॥ सयुसाविनाः । दन्तिष्ठांगु
 र्त्तुसं सृष्ट्याः ॥ न चामुडयमीविना ॥ कनिष्ठ्यांगुष्ठं कोसको ॥ कथं विनयं तनम् । नर्तनी मध्य

मानामाः १॥ स्रुतांगुष्ठं वर्जिताः । मूडेवागमलिनीथाका ॥ सैवधयवियालिना ॥ वविदस्यायं
 रुदः ॥ चानमूडं कवद्वद्वं ॥ कृत्वा न्यानीयुष्टं यत्नः ॥ नर्तनी मध्यमायानि ॥ याजयित्वायुः कः
 स्यात्तु ॥ या न्याकावैरुवत्तुडा गमलि
 खदकुरुसः ॥ कृत्वा स्नानमदन्तिष्ठाः ॥ नृद्योयुष्माविनी ॥ अयवायिरुदः ॥ अक्षामू
 जा अन्त्या न्याविन्यस्य मध्यमं यायनाः
 लथाः ॥ मरिडा यच्छिडमध्ययः ॥ गमलिनीयवा । कक्षा विलसन्मवस्या ॥ दुष्टवायुनिर्जयः ॥
 पुनाः १॥ न चामुडा ॥ अर्द्धमाधनकर्मणि । मणिर्वैधलिनीकृत्वा ॥ यस्तु नमुलिकीकृत्वा ॥

कनिष्ठां गुह्ययुगल मिलित्वान्कः ४ यसावधत् ॥ सकृजिह्वा द्रव्यामूडा वेष्टानववर्णकवी ॥
 वामूडा युद्धयुगल वन्निर्मलतलपूजने ॥ वदामूडा पूर्वमूडा सरूया मूर्ययूजन ॥ कनिष्ठा
 नामिका मध्य ॥ अस्य दक्षिणेन तु ॥ कवस्य तर्जनीं गुह्य यसायं क्रियते तु या ॥
 सामूडा द्रव्यागहनां यानि दा ॥ यिनी ॥ एनां तु दर्शयत्यस्य यन्मधुलपूज
 अर्धमूर्खी कामरुक्ता द सुखेवना ॥ दृष्ट्वा यन्मंगुलिकः ४ लिङ्गा मूडायै मल्ल
 संक्षिप्ता ॥ अर्धं क्लृप्येनिका मूडा ॥ एनां ह्यविचक्षते ॥ सम्यक् समीपविने ४ पूर्य कलायति
 विनां जलि ॥ आवाहनी समाख्याता मूडा दलिक सन्तमे ॥ वचिवस्यायं किंचिद्दृष्ट ॥ ॥ य

था अर्धान्युक्ता मल्लिखी ॥ कृत्वा दक्षी युसावधत् ॥ अंगुली ४ संदना लना ॥ अंगुष्ठा युक्कनिष्ठा
 या ॥ कृत्वा मूलसंल्लेपमूडे वावाहनी मन्तनि ॥ यत्र पुत्रवधवद्वि कायामयिविलेख ४ यथा
 रुक्माक्षी मज्जलि ॥ कृत्वा नामिका मू ॥ लयवर्धन ४ ॥ अंगुष्ठी निक्षिप्यत्यस्य ० मूडा त्या
 वाहनी मन्ता ॥ हिंसां लिपुना दान ॥ लिखतुं दर्शयद्दृष्ट ॥ अर्धमूर्खी कनासेव ॥
 मूडा क्लृप्यनकर्मणि ॥ उद्धिना गुह्यन ॥ दृष्ट्वा सु सीया गल्ले निक्षिप्यनि ॥ अन्क ४ यव
 लितां गुह्या ॥ येव संवक्षिनी मन्ता ॥ उक्तानमूरियुगला ॥ सैनिकवर्धनसंक्षिप्ता ॥ दवना लवठ
 गाना ॥ न्यास ४ स्या सकली कनि ॥ सद्यदलकृता मूरि ॥ द्विर्वा ॥ अमूर्खनर्जनी ॥ अर्धगुह्यनमू

६॥ यमहिराजामिनासमी । अथा न्यगं धिनां गुह्य ॥ यसा विनक बां गुली ॥ मद्रामुड यमूदि
 ना ॥ ययमी कव (व) व (व) ॥ अथा न्यग यिनी रुक्मी ॥ कुर्यादं गुलिसं विष ॥ उद्धोगं नर्तनी ईई
 संहिष्टं वयं लुकी ॥ १॥ लु (था) य ॥ नमूड यं ॥ दवना नास कालिणी ॥ गुजा वृद्धं म
 खी कृत्वा ॥ वी वृक्ष विव व व य न ॥ य ॥ शुद्धि व व यं लुजा ॥ ल (था) य न सं लुका म ॥
 स्या नमस्का व मूड यं ॥ कार्या द व न म ॥ लुकी ॥ यसा विनां गुली कुर्या ॥ हूमि स्य लित ली
 कवा ॥ अथा न्या गुह्य संहिष्टा ॥ मूड यं विनना मना ॥ दक्षिणां क म लेव ॥ यथ स्य स्य किका क
 के ॥ रुक्मा स्य क मूड यं ॥ द्वितीया य वि की लिना ॥ हूमि स्य ॥ तथा वाम ॥ रुक्म दक्षिणा रुक्म क

म ॥ नि ॥ यथा नि यमस्य ॥ यष्ट उ न्ना मथ रुक्म ॥ ०० यं काम ॥ मूडा स्या ॥ लुमी या य वि की लिना ॥ अ
 ने मुदी मूड मूड ॥ संहिष्टो मूडि मूडिका ॥ विषा य ग धिनी रुक्मा ॥ वना न्या गुलिसं विष ॥ नर्तनी
 नी स्या निगृह्णाया ॥ यथ स्या नामिका ॥ द्वयम् ॥ संधा उ य न मथ मथा ॥ यो न्या कार्त्त य क
 ल्यथ न ॥ यान मथ गत कुर्या ॥ क नि ॥ स्र स्र लं य न ॥ अगुह्यथ दा उ न यं रुक्मा ॥ क नि
 द्या मथ यष्ट ॥ १॥ यानि मूड य मा स्या ॥ ना ॥ था य नी या हि सा व के ॥ च नानि ॥ यं य मूडा
 नि ॥ युल मदिष्ट देव नाम ॥ नर्तनी मथ मां गुह्य ॥ याग ल्या ल्या मूडिका ॥ मथ माना नि कां गु
 ह्य ॥ याग ना य सं लुका ॥ क नि द्या नामिकां गुह्य ॥ याग यान मूडिका ॥ क नि द्या नर्तनी गुह्य ॥ युका

नूदानमूडिका । मूडासर्वो गुलीयाग । समावास्यायकीहिना ॥ नगार्थवविधा मूडा नैयद्यादोयुद
 नथ ॥ १ ॥ रुक्मिणीसंमुखीकृत्वा संलग्नसूयसावित्री ॥ कनिष्ठांगुष्ठसंलग्न मूडेखायकसं
 हिक्वा । सयांगुलीनांमध्यं वामरुः ॥ २ ॥ अस्यांगुलि ॥ यसायांगुष्ठयुगलं सयां
 ललाटेव । तदंगुष्ठयैकार्यं संमुखं ॥ ३ ॥ विनयंरु ॥ ४ ॥ वकमूडासमाख्याना गुर्विष्क
 निवयिथ ॥ ५ ॥ निक्वालिक्वायना ॥ ६ ॥ ॥ अनायाहिमुखीरुक्मिणी कृत्वातुगथितागुली ।
 अंगुलीमध्यमंरुय ॥ ७ ॥ संलग्नसूयसावित्री ॥ गदामूडेयमूदिनी नैयद्यावनल्लु ॥ वाम
 कलांगुष्ठ ॥ लग्नसूयकनिष्ठा ॥ दक्षिणांगुष्ठसंलग्न ॥ नक्कनिष्ठायासावित्री । नऊनीमध्यः

मानामा ॥ किचिस्त्रिकाद्युयालि ॥ १ ॥ वंगुमूडारुवंदया । गायिवल्लरुयल्लरा । अनायायमुकन
 यो मध्यमानामिकांगुली ॥ २ ॥ अंगु
 वयथदया मूडाणीवसंहिना ।
 कनिष्ठायादृष्टवधा नऊनीदक्षि
 मूलकः ॥ अंगुष्ठमध्यमं वामं सयां सवला ॥ ३ ॥ यथा ॥ वतसीयसंलग्न मूडाकोष्ठसंहि

का ॥ अथ यदुक्तः ॥ ॥ अनामा यदुक्तं लम्बा ॥ रुनी या यविकी हि न । अमर्तुं दाम् मूह मूही ॥ संहि स्त्री म
दि मूडिका ॥ विषय गथि नो रुका ॥ वना न्यां गुलि संधि ॥ नर्क नी रानि गृह्णाया य
त्यस्मान्नामिका दयम् ॥ संया जयत्त
कूया ॥ कनिष्ठं सवत्तं यदु ॥ अगुह्य
यमा रथा ना ॥ या यनी या हि साधक ॥ नानि ॥ यं च मूडा नि ॥ यत्तम दिष्टु देवताम् ॥ नर्क नी मध्य

मागुह्य या या या ना यमूडिका ॥ मध्यमा नामिकां गुह्य ॥ या ना ना यसं रुका ॥ कनिष्ठाना
मिकां गुह्य ॥ या ना ना नमूडिका ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ कनिष्ठा नर्क नी गुह्य ॥ यूका गुदान मूडिका
मूडा सर्वं गुलीया गा ॥ समाना रथा य
दर्शयत्त ॥ रुकी तु स मूखी रुका ॥ स
मूडे खा चक संहि का ॥ संया गुली
गुह्य युगलः ॥ संया हा लायत्तं नव ॥ नदी गुह्यी कार्य ॥ स मूखी विन वरु न ॥ चक मूडा स
मा रथा ना ॥ रुनी विष्णु निवसि य ॥ ॥ नि कालिका युवा ॥ ॥ अना न्या हि मूखी रुकी

कलाउगधिनांगुली। अंगुलीमध्यमरुयः संलग्नसूयसावित्री ॥ गदासूयमूदिनीं
 स्वयंमातृनृपुं। वर्यवामकलांगुली। लग्नसूयकनिष्ठिका ॥ दक्षिणांगुलीसंलग्न
 कनिष्ठायसावित्री। नर्कनीमध्यम ॥ मानामाः किंचित्संकाश्यालि ॥ वर्य
 मूडाहवदया। लग्नियवसुहवसु
 गुली ॥ अंगुलीनवद्वीया। कनि
 डाणीवसुहिका ॥ अनामायसुहसंलग्न। दक्षिणसूयकनिष्ठिकात्। कनिष्ठयादृष्टवध
 नर्कयादक्षिणयानथ ॥ वामनामायवद्वीया। दक्षांगुलीसूयसूय ॥ अंगुलीमध्यम

वाम संयासुसवलाः यनाः यनसोयगसंलग्न। मूडाकोसूयसंलग्निका ॥ अंगुलीदश ॥
 अनामायसुहसंलग्न। दक्षिणसूयकनिष्ठिका। कनिष्ठयादृष्टवध। नामदक्षनर्कनीसू ॥
 पृहीलादक्षिणंगुली। मध्यनामिका
 नृसन् ॥ दक्षिणमलिवं(वेय)वामां
 दर्शनोयाययत्नः ॥ स्य(नर्क)टा
 द्वयनमालाव। मूडययनमालिका ॥ अ(ध)मूखादक्षरुसूयसंलग्निकायः ॥ न
 र्कयांगुलीसंयाग। दक्षिणसूयनमूडिका ॥ अंगुलीदश ॥ ॥ नर्कयांगुलीसंकावगभा

हदिविचयसंन। वामरुसाभूजं वास जानू मूर्धनि विनयस ॥ स्नानमूडा रुवदं वा नामव
 उर्यवत्तना ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥ आभ्यां मूर्धनि विनयस ॥ संध्यां विलेखनं विले
 मूडा यकीर्तिना ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥
 कनाथवद्वा नस्यायं यो उ विनयस ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥
 नरु हदिरुसा ययव विमलक्षी ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥
 मिह कथिना ॥ गायत्री या विनयस ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥
 अर्लया सय रु सय म ॥ माना नि कन थ ॥ नया ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥

कनिष्ठां न ऊनी चैव ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥
 नलं नलं नूक वया ॥ मिथं क संध्यां वंगुली ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥
 मर्मा ॥ गङ्गाया यव मूका संध्या ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥
 अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥
 सध्वं वा भवदवाना ॥ संध्या ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥
 संध्या ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥
 कथं मान ॥ यून ॥ यून ॥ मूर्धनि विनयस ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥ अंगुष्ठमकनं कृत्वा ॥

वंद्या मूडान् श्रुतिवर्द्धनी । अंगुल्यान्वां च वदथा चथा कस्य कनिष्ठिका ॥ अ० ॥ मूखी रि०
 सवो रि० मूडयं नृपं मर्मा । वामस्यांगुष्ठं वधा कनिष्ठा मंगुलिगुं यालिगुलवर्त्ममूखा
 ईदृशो मूडानृसिंहग । लक्ष्मीनृसिं
 र्वांगुलयः ४ स्यूवधोगुगः ४ स्वस्तान
 वधामूखा कृत्वा तलसंथाक्रमधाम
 यन् ॥ नर्कनीयष्टमालयो अंगुष्ठो नर्कनीयिनी । वक्रमूडान्वदवां नृपं ४ सनिष्के
 मना ॥ वक्रमूडान्वधवा नर्कनीयं कुमधम । पीठयद्वष्टमूडेवा सर्वथाययधानि ।

नी । कनिष्ठानामिकांगुष्ठांगुलीनायाजयद्वधः ॥ अंगुष्ठां कवमधानु नर्कनीचु ।
 युसार्यथ । कृत्वा कृत्यकवद्वधं यथगणनियोजयन् ॥ निगर्जनाममूडयं नृवसिं
 रुववारुथा ४ उर्ध्वकृत्वा तदागुष्ठं
 वाममूर्ध्नि तथाईग ४ उर्ध्वगुष्ठं
 एवमूडया ४ कनिष्ठादि विभाक्तः
 थकयथक् ॥ विमूर्खयैवमूर्ध्नि वक्रमावर्द्धमवय । विमलध्वजट (ध्रुव) ४ यैग ४ यैडसुः
 थेवानवानां विष्णुमूर्त्तीनां साद्वमर्कनमूर्धिका ॥ कुमानवसमाख्याना नायिकानां न (थेव)

व। स्वस्ति ते कथितं पूर्वं स्वमा न्याय्युच्यते धूना ॥ दत्तानं मंजुलि कृत्वा जंगुष्टो द्वौ कनिष्ठौ ॥ ४ ॥ मृ
 लं क्रियुं कृत्वा सौंथा स्यात्तु धयुद नयन् ॥ स्वथानि विनिविद्याना मूडा दधी कृत्वा द्विदा ॥ जंगुष्टौ
 मध्यां मां येन नामयित्वा कवस्यतु ॥ जंगुष्टौ जयन्तं नलस्या सव्य रुक्म ॥
 अथ कृत्वा वाम रुक्मं मूडा सिं ह मुखी ॥ ५ ॥ यं यी लो दु दुग्गा यो ॥ सूर्य युग स्य
 यक्षि ॥ ६ ॥ रुग्म मूडा क धौ मूलं लम मुखं ॥ ७ ॥ यथा यु की र्तिना ॥ मम विद्या रुक्म मूडा ॥ सर्वदा
 यीनि दायनी ॥ मृष्टि द्वय मध्यान्तानं कृत्वा सौंथा स्य यत्नं ॥ ८ ॥ दक्षिणस्य कनिष्ठादि यसाश्च कसन
 ॥ ९ ॥ न धा वाम कनिष्ठायां मकैकं नयसा वयं न ॥ जंगुष्टौ मूडा ॥ समाख्याता नाम नवामन ॥

कृष्ण ॥ यो ज्ञा समन मनश्चै विलीया पुयतन कथा ॥ १० ॥ दृष्ट्या ग ॥ सावर्णी य नये व दिय साव
 नी ॥ अं कं य क न ल स्वास दक्षिणं ल मूडिका ॥ ११ ॥ उग्र मूडा समाख्यास्य रुक्मस्य वि यथा
 न ॥ १२ ॥ उडादि लोक यालानां दणमू ॥ १३ ॥ दायकी र्तिना ॥ सर्वं वामयिदवानां यव
 मयीनि यद्वं ॥ १४ ॥ जंगुष्टौ गं तु नय ॥ १५ ॥ अं कं य मध्या
 माशासु दक्षिणस्य ल वंगुली ॥ १६ ॥ नयत्तु लोका वं कृष्ण लं किं तु द्विद
 म् ॥ सर्वं वामयिदवानां नथा कृष्टि करं मरुत ॥ १७ ॥ या दान ला सौ सथाश्च नदं गुष्टदयं नन
 ॥ १८ ॥ उद्वं सौंथा जयन्तामी नस्याय विन धौ जलि ॥ १९ ॥ याग मूडा समाख्याता यागिनी नल नद

लिनाम् । सर्वेषां भवदवानां पूजनं चिकित्सनम् ॥ या गमूडा समाख्याना दुष्टि यीनिकजी
 सदा । यो कलिनाम मूडा उ उर्द्धोऽक्षरावथा जिनाम् ॥ विमञ्च दर्शय दक्षी उर्द्धोऽक्षराः
 कृतीकृती । रुद मूडा समाख्याना म मविस्ती द्विः ४ यिया । अगुष्ट दं लुनिः
 क्रिया कवथा उ रुथा सुली ॥ अण नथा जयथ्यथा । कनिद्या युगलं नन ४ ॥ २०
 उ रुथा रु सुथा द्यन्या सुर्द्धो न्याद्याः श्रुथा जयन् ॥ अगुष्टे सुष्ट थक् दक्ष्य दर्श
 यन्तु कनिष्टिका म । मूडा समा रु ननाम् कामदूर्द्धो जमायिया ॥ सर्वेषां भवदवानां भारुर्नः
 यीनिदस्तनम् । सर्वो गुली सुर्द्धो काद्य अगुष्ट न थक् नर्द्धनीम् ॥ यसा र्द्ध कवथा ४ यथा दं गु

हा संतुष्टा जयन्तः । अंगुष्ठा एव नर्कं न्या । अंगनामिदं नर्कं नीम् ॥ यथा न किंचित्साथे वं धनः ।
 मूर्डा समीपिना ॥ अथ वर्यं धनं दा ॥ ॥ वामस्य मध्यमांगे तु नर्कं न्यानिथा ऊयन् । दर्शः
 यद्वक्त्रि (१) स्थ-ध-धनं मूर्डयमीपिना ॥ अथ वायि रू द ॥ ॥ वाक्शूलं स्थ (१) रू न
 यद्वक्त्रि (१) वसाधकः ॥ धनं मूर्डयमी ॥ ॥ सिद्धिं दायिनीं हाविता यदा ॥ वधो गुलीना
 मगलि उक्ताती (१) निथा ऊयन् । अना ॥ सिद्धाया ४ यद्वक्त्रि (१) अंगुष्ठां निथा ऊयन् ॥ धू
 रीगुनी ववक्त्र्या । हा न वाम नरु र्ने वव । उनी वमूर्डा वाख्या ना सर्वे वा यीनि वरुनी ॥ वामद
 क्त्रि (१) दक्त्रि (१) गुली (१) वधमूर्वी ॥ सीवाय मध्यमं नासा मन्त्रस्या (१) विमूयथन् ॥ रुयगाव

शिवाम्बुजा न तू नैव रुका विष्णो । दक्षाय विवर्तयाम् कलाकाननमक्षः सुधीः ॥ नामयः
 दिगिथाका मूडावावा रुसं हि वा । दक्षरु सुवार्द्ध मूखः वामरु समक्ष मूखः ॥ श्रीगुः
 ल्यायु संयुक्तः मूडावावा रुसं हिः । नासिवाग समीपस्था कलाकामस्य न
 ऊनीः ॥ दक्षवद्विष्णो कुर्याद्विष्णोः । लस्ययदसीनीः विष्णोः सनस्य मूडयः न
 तू जायं यदर्थयत् ॥ मूर्द्धि स्मृगुः । ह मूर्द्धि ह मूडावेला सुभादनी । दक्षो ह
 संयुतो कला यस्मिन् गुलि को न थ ॥ नर्द्धो मध्यमाय दक्षः । गुर्द्धो मध्यमागि तो । काममू
 दयमदिना कामविष्णु शिवाम्बुजा ॥ विष्णोः समिना न मूडाविष्णु इदिविनाः । लक्ष्मीः

लिव मूलाणां कथं नमः यवं मया ॥ उद्धिर्न दक्षिणां गुह्यं वामांगुल्यु न वन्धयत् । वामांगुली
 दक्षिणां रि वंगुली रिष्ठ वन्धयत् ॥ लिङ्ग मूडय माख्या ता लिव संनिध्य का विधी । थानि मूडा
 पूर्व मूका रिष्ट लायु यं न त्व नः ॥ अंगुल्यु न कनिष्ठं तु व धाष्टि स्थांगुलि वयः । यसा वयं
 रिष्ट लाय्या मूडं वां य विधी लिङ्गा ॥ वरा रुयै पूर्व मूकं मृग मूडय मूय ना । मि
 लिखा नामि वा गुह्यं मध्य माग लिखा ऊ
 मी विना । यं राहु त्या दक्षिणां तु मिलि ना ल्यु र्ध्व मूक ना ॥ खट्वां ग मूडा विख्या ना लिव त्या नि
 थियाम ना । यां न व द्वा मरु र्ध्वं कृत्वा वाम कं न धा ॥ निक्षया धि न वत्क र्था ल्मूडा का यालि

कीमता । मूर्च्छित निधिलौ वक्षः ॥ ब्रह्मदक्षिणमवधामा ॥ दक्षिणां नृद्धमूनस्य ॥ कर्णदक्षिणयवाव
 यन् ॥ वक्षामूडा उमरूका ॥ सर्वदिद्युविनामिनी ॥ सैयूटाद्या ॥ पूर्वमूका ॥ रुगमूडा समूचने
 ॥ द्वयार्मो धर्तुगुहाग ॥ मीगुल्या ॥ ध्रुवनि
 थल्यून ॥ रुगमूडा समाख्याना ॥ लक्ष्मी
 लस्य कवस्यया ॥ वियद्गर्ग नक्षत्रस्य
 वृक्षवाणिनिवयिया ॥ धोलासनादि ॥ कथिन ॥ स्वनिवन्निव ॥ ध्रुव ॥ नर्द्धन्य ॥ गुह्यथावग
 सात्मा सैया सयंगुली ॥ अन्त्याया ॥ कवयथिमु ॥ सासिवलीयकीर्तिना ॥ यि ॥ मध्यमावधामा

ना ॥ नृदानादिष्टकर्मणा ॥ सर्वदाधीनिजननी ॥ असिद्धलीयकीर्तिना ॥ यागाद्या ॥ पूर्वमूका ॥
 ॥ दक्षिण ॥ महवना सदा ॥ उकां पूर्वयद्ग ॥ धन ॥ सैयूता दक्षु उचन ॥ अन्तर्गुह्यमूर्च्छित ॥ कवा
 वामकवस्यय ॥ मध्यमाद्यादक्षिणस्य
 गुहाद्यानिथ्याकथन ॥ दक्षिणां थाअय
 रागा मूळमूडयमूचन ॥ ब्रह्मदक्षिण
 दवानां ॥ युष्टिदासर्वकर्मसू ॥ अर्द्धउद्धस्यानिष्ट ॥ पूर्वमूका ॥ निधिनिधुयनं धूना ॥ मूर्च्छिद
 किणरुस्य ॥ यथाधोयकारुवन् ॥ सास्यात्रिखविनिमूडा ॥ उद्धस्य ॥ निवयिया ॥ धोलासनाद्या

धिता दलकलुलकादयः ॥ उनानावविभावाथ सूडावद्विलनिमना ॥ अगववगलसस्य मू
 डावद्विलनिसुथ ॥ अनाथा ॥ कथिनायूवो ॥ वीजयुनाकयासुथ ॥ उयकिनासुसिद्धवा मू
 डादिचयन ॥ मनाद्वैकययगल
 ईमूवीमया सवत्यावईमूहिका ॥ द
 वाममूहिस्यनईन्या दकमूहिस्यन
 न्यकनियन ॥ एवायाणाकयामूडा वां कूर्णकथिनयूवा ॥ अथयययागलमूडा ॥ नईन्या
 कथा वीकविनायूवाम ॥ यालमूडासमाख्याना गलनस्यानिभायदा ॥ नईन्या

म... संनिविः ॥ सुनागुहमूहिका ॥ अ... मूवीदीर्घयूवा मध्यमाविष्ममूडिका ॥ यर्तुन
 डायूवमूका यसिद्धोलुकाकया ॥
 नांकलयवासीछा उकाअनिविहाय
 निहंगुलीययहन सीसुखखमू
 य ॥ आविनांलिंकया यर्ममूडयः
 तीर्यन ॥ मूहिकवाउरुसाय ॥ यामस्यायविद्विगल ॥ कूर्योन्नलमूडय ॥ निवसुयवदी
 लिंका ॥ यान्नाथा ॥ यूर्ध्वमूका ॥ नकंथा उलमूडिका ॥ यवामूडानथाकथा मध्यमद्वयसाय

का । कनिष्ठिकेन धनीय नदगुगुकोक्षियं ॥ लक्ष्मीं मूढा नथाश्रया सर्वसंयस्य दायिनी ।
 रुगाद्याः कथिनायुमं गायुष्टीवमाप्रियः ॥ सवस्यस्याश्रु कमाता नस्यलकणमूढा न साकावी
 (म)यमं धूना ॥ वीजावादनवद्वली कृतासंयारयकन ॥ वीजा मूढं यमाख्यानाः
 सवस्यस्याप्रियं कत्री ॥ वाममस्थि स्त्रा हिमखं कृतायुद क मूढिका । दक्षिणांगुष्ठ 28
 नकुन्या वसलमुनधंगुली ॥ दासा यंसंरुतास्माना नखायाख्या नमूढिका । ध
 नाद्याठदिगायुर्वं गियुनायादुमादन ॥ अनुनामानकुनं कृता नकुनी कटिलाकनि । कनिः
 द्विकनियुनिम निजस्तानमंरुध्वी ॥ निखलुरी समाख्याना गियु कानकर्मणी । मध्य

मध्यमा दवा कनिष्ठगुगुधाधिभ ॥ नकुनी दंडवकृता मध्यमाययुनायिक । नखाय
 यथमामूडा सर्वसंकोरुकाविणी ॥ अन्यगुगुना नखायास्त्रिष्टी कृताविनलम
 द्विका । यसावथश्रुनकुनी मूढे वाकाहिनीमना ॥ दवीसंकोरुकाविधिः
 मध्यमं सवस्यदा । विथनं यजमं सानि सर्वविदाविणीमना ॥ अन्यगुगु
 नखावडाविनं मूडासंयसाविः नमधमा ॥ अन्यमाकुंयितागुगु मूडाव
 र्थकाविणी ॥ यजगुगुयदियमयि ॥ मध्यमा नकुनीयां व कनिष्ठानामिकं सः
 म । अंकुणा काव नूदायां मध्यमं यजमं ध्वी ॥ सर्वसंकोरुमूडेव स्यादा कर्मणी का

मध्यमथा नैगुहो सयुनोयूनः ॥ १ ॥ आस्यायवरी मडा विधयासुकमाकनी ॥ अन्तुगयि ॥ सयु
 दन्तिगुरुकुरु दन्तिगम ॥ वाकुकुवामकादवी रुकीसयविदयव ॥ कनिहानामिकादवि युकी
 मनकमनतु ॥ नकुनीयासमाकाने सर्वोसामयिमध्यम ॥ अगुहो तुमरुगानि स
 उलावविवायथन ॥ २ ॥ यीसायवरी नाम मडासर्वोहमाहम ॥ यविदयवकी ॥ २३
 एया वहुयडायनीयिथ ॥ नकुनी गुहयुगलं युगयकायथरुं न ॥ अथकः
 निहयवहुं मध्यमविनिथाजथरु ॥ नथेवकुटिलथाह सर्वोवसादनामिक ॥ वीजमूड
 यमयिवा सर्वसिद्धियवहनी ॥ वविदययायंरुद ॥ कलाहानीकवाहिरु कवरीविरुना

गुली ॥ दन्तिगह मध्यमामा ययसेककनिसुका ॥ दयस्यानामिकनद लासामययिना
 सनु मध्यमसयुनायव नकुन्यावकुणकनी ॥ मध्यमाययुसलपु विधयाह मयुनी नन ॥ अ
 गुहो वययडाज मूडययविकीहि ना ॥ यानिमडायुर्वमका साहयाययुधव
 ॥ १ ॥ नकुनी कालिकायुवा ॥ २ ॥ गवानुवाय ॥ ॥ साथानिमडाकथिना
 मडाविरुजंनयुवा ॥ अहवाथानिम डाया युथमायविकीहिना ॥ द्विनीयाथः
 वरीमडा कामायासु रूहिदा ॥ गाविद्विवायुयुगुका ॥ अन्तुगयि विद्विका ॥ अनामिकी
 दन्तिगय नकुनी कामनीयसनु ॥ वामनामोदन्तिगया नकुन्याविनिथाजथरु ॥ नकुनथा

ॐ नमः
नकुनीत्यां वक्रयादगुभागतः। मध्याद्ययवविनास्यार्द्धरागाज्जनानामिक ॥ मदग्रहणनसं
थाग्रह रुधेयवकनिधिक ॥ अण्वेत्यनुसंयुक्तं नन्तुल्लिख्यकन्यसत् ॥ यैत्रयव
नीथानि मूडासर्वोर्थसिद्धिर्द्वा ॥ अ॥
॥ गुड्यानिःसमाख्यामा कामाख्या
कनिष्ठत्वनामिक ॥ अ॥ राणांथाः
वापि अन्यान्यस्यानिथा ज्ञायते ॥ मध्यममध्यमधागुष्ट निथा आगालिया ज्ञायते । यानि स्ति
नकनीयाः विद्यागुष्टिदासदा ॥ सल्याद्वदनथावस्था पूर्ववच्चयनामिक । कनिष्ठाः

द्वास्तोत्रं च नमः श्रीगुरुभ्यो नमः । मूलाष्टकं च नमः । मूलाष्टकं च नमः ।
 यस्तुतीकृत्य कृत्वा यानां नमः । मूलाष्टकं च नमः । मूलाष्टकं च नमः ।
 यां वामस्य नमः । मूलाष्टकं च नमः । मूलाष्टकं च नमः ।
 स्य च । मूलाष्टकं च नमः । मूलाष्टकं च नमः ।
 एवमेव च । मूलाष्टकं च नमः । मूलाष्टकं च नमः ।
 मध्यं कनिष्ठं च । मूलाष्टकं च नमः । मूलाष्टकं च नमः ।
 य मूलाष्टकं च नमः । मूलाष्टकं च नमः ।

वदुक्थोक्तवदयम् । ॐ यंतुयाजनीनावे सर्वं वां रयि र्यं कवी ॥ न ता अरु सनाखाता ।
 यान् ४ कामधुवीयिया ४ सुहिरुवनवा नुवा ० दवानामयितुदिदा ४ ॥ यानायां यरु विव
 यः वाग्रादकलरुनथा । अरुथानी ४ सव अरु उयसुस्यसना नन ४ ॥ विसरु
 नयुजनय सव (अक मरुन न ४) ५ नाथान् ४ समाखाता धुलिकायुजनयि २५
 व ॥ देकां गुह्ययवायुधु कि ह्वा रुसु इथाननु ४ । सावका लत्मकी मृष्टि कूर्या
 साकूरुमृष्टिका ॥ कालक जी पूर्वमुका वासुदवविथारुन । अजल्यजलिमृडाया वासुद
 वयिथोवमा ॥ मृष्ट्या नूडी कनां गुह्ये नरुं वाण उविन्यसु । सर्ववका कवी सुखा कन

मृडाया कालिका । यार्थनाखा पूर्वमुका विसयादिब (था) युन ॥ दक्षिणा निविडा मृष्टि नासि ।
 का यिन नरुनी । मृडाविसयसं क्राया विसयावलाकारिणी ॥ मृष्टि नूडी कनां गुह्ये दक्षिणान
 दमृष्टिका । नरुं ची गुह्यसंथागा दगता । विनूमृष्टिका ॥ कनिष्ठा गुह्ययू मृडा शिकी
 लाखल न भूता । कवथा न गुली सर्वो ४ । सर्वो (था) कवस्थिता ॥ निथा सुवनलये
 व तद (अ) यि निथा सुव । अरु व (ग) यो उयसु मृडा समीलनी मता ॥ ओम रुमी ।
 मृनीलाना मियथी निविद्वे नी । अनामिक कनिष्ठ च सीथा अरु नायून ॥ मध्यमान नरु
 नीनीनु (अ) नूमृडयवनम् । सार्ध (अ) न विनिखाय सुयानि विद्वे नी ॥ अंगुष्ठ नरुनी

